धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में नारी के विविध रूपों की विवेचना

सुमन देवी*

टी.जी.टी. हिंदी, कन्या गुरुकुल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गैंडा खेड़ा, उचाना, जींद, हरियाणा, भारत

***Email ID**: sumankhatkar383@gmail.com*

Accepted: 07.05.2023 **Published**: 01.06.2023

मुख्य शब्दः धर्मवीर भारती, गद्य, साहित्य, नारी।

शोध आलेख सार

सृष्टि का उदगम स्त्रोत नारी है। नारी के अभाव में इस सृष्टि की कल्पना भी नही की जा सकती। देव–दानव से लेकर मानव तक सबकी जन्मदात्री नारी है। यह मां, बहन, बेटी, प्रेमिका, पत्नी आदि अनेक रूपों में हमारे सम्मुख रही है। जिस प्रकार बिना तार के वीणा और बिना धुरी के पहिया बेकार होता है, उसी प्रकार नारी के बिना पुरूष अधूरा है। देवताओं के साथ नारी का नाम पहले जुड़ा होता है। यथा–सीता–राम, गौरी–शंकर, लक्ष्मी–नारायण, राधे–श्याम इत्यादि। भारतीय विधान संहिता के नियमों के प्रसिद्ध महर्षि मनु ने घोषणा की थी कि जहां नारियों की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। प्राणी जगत में 'नारी' शब्द नर के समानांतर है। इसका प्रयोग स्त्रीलिंग वाची 'मादा' प्राणियों के प्रतीक रूप में होता हे। किंतु समाज में नारी शब्द सामान्य अर्थ में गृहित नही है क्योंकि उसका स्थान नर से कहीं बढ़कर है। कोमलता, दृढ़ता, स्नेह आदि गुण नर की तुलना में नारी में विशेष रूप से पाए जाते हैं। यही नही रूप–आकार, शरीर–गठन, कार्य–शैली यापन की विविध स्थितियों में नारी विधाता की श्रेष्ठतम अनुकृति सिद्ध हुई है। सीता, पार्वती, सावित्री, महारानी लक्ष्मीबाई इत्यादि नारियां इन्ही आदर्शो का प्रमाण है। भारतीय साहित्य में नारी का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इसके बिना साहित्य सृजन ही निरर्थक है। भारतीय परम्परा और हिन्दू शास्त्रों में नारी को 'श्री' कहा गया है। प्राचीन काल में भी नारी को पुरूष के समान ही अधिकार प्राप्त थे। उसकी उपस्थिति के बिना यज्ञ जैसे धार्मिक कार्य भी पूर्ण नही होते थे। बहुत से कवियों, लेखकों ने नारी में ही परम, प्रियतमा की रहस्यमयी झलक देखी। भक्त कवि तुलसीदास ने भी नारी को समाज में सम्मानित पद पर प्रतिष्ठित किया। उनकी अराध्या जगतमाता सीता का आदर्श चरित्र इसका प्रमाण है।

पहचान निशान

*Corresponding Author
© IJRTS Takshila Foundation, सुमन देवी, All Rights Reserved.

परिचय

नारी सदैव ही पूजनीय रही है, चाहे उसे किसी भी ढंग से पूज्य क्यों न माना गया हो। अनादिकाल से ही स्त्री को देवी रूप माना गया है। नारी का परम्परागत रूप भारतीय रूप माना जा सकता है और उसकी आधुनिकता उसके पाश्चात्य रूप से झलकती है। धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में नारी के विविध रूपों की विवेचना इस प्रकार हैः—

1. **पुत्री रूप में नारीः—** समाज व्यवस्था में रिश्तों का अपना एक विशेष महत्व होता है, रिश्तों को हम प्राथमिकता देते हैं। दोस्ती के, आस—पड़ौस के, कुटुम्ब कबीले के, समाज के, लेकिन इसके बावजूद भी हमने अपने आपको एक सीमित दायरे में समेट लिया है। पुत्री रूपा नारी के सन्दर्भ में धर्मवीर भारती ने अपने उपन्यास 'गुनाहों का देवता' से भी यदा कदा पुत्री रूप में नारी का सटीक चित्रण किया है यथा—अन्यत्र अपने उपन्यास में पुत्री रूप का चित्रण करते हुए भारती जी लिखते हैंः— "जब सुधा का विवाह हो रहा था तब विदाई के पहले सुधा ने पुत्री के रूप में अपनी व्यथा चंदर से कही, पापा ने तो मुझसे बोलना ही छोड़ दिया है। चन्दर। पापा से कह दो आज तो बोल लें कल से हम उन्हे परेशान करने नही आऐगें कभी नही आऐगें। अब उनकी सुधा को सब ले जा रहे हैं जाने कंहा ले जा रहे हैं और फिर फफक फफक कर रो पड़ी।"[1]

   साहित्य में पुत्री रूपा नारी का वृहत चित्रण यद्यपि नही हुआ है किंतु धर्मवीर भारती ने अपने उपन्यासों में नारी के पुत्री रूप का वर्णन किया है। एक अन्य स्थान पर जब सुधा के ब्याह की तैयारियां हो रही थी तब डा. शुकला अपनी पुत्री के बारे में सोचते रहते थे लेकिन उनकी हिम्मत न होती थी कुछ पूछने की वे विनती से रोज पूछते—"सुधा खाना खाती है या नही? विनती कहती हां तो वे एक गहरी सांस लेकर अपने कमरे में चले जाते।"[2]

   इस प्रकार हम कह सकते हैं कि धर्मवीर भारती के साहित्य में नारी के पुत्री रूप का वर्णन मिलता है।

2. **बहन रूप में नारीः—** रिश्ते नारी रूप के बिना शायद ही कल्पित हों। चाहे जो भी रिश्ता हो, नारी की भागीदारी तो रहती ही है। सभी रिश्तों में बहन रूप को बहुत ही पवित्र दृष्टि से देखा जाता है।

धर्मवीर भारतीय जी ने अपने साहित्य में नारी के बहन रूप को चित्रित किया है। सावन के महीने में आने वाले त्यौहार रक्षाबंधन के बारे में भारती जी कहते हैंः– "कैसा अदभुत है यह सावन की पूर्णता का रस बिंदू, भाई और बहन का निश्चत प्यार और विवाह के बाद भी जीवन भर बहन की रक्षा करने का भाई की प्रतिज्ञा है।"[3]

इसी प्रकार 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में जब सुधा बीमार पड़ी तब विनती ने बड़ी बहन की खूब सेवा की। जब चंदर सुधा को देखने आता है और पूछता हैः– "क्या बात है विनती अच्छी तो है? चंदर ने पूछा विनती ने कहा और अन्दर जाते ही दरवाता बंद कर दिया और चंदर की बांह पकड़कर सिसक सिसक कर रो पड़ी। चंदर घबरा गया।"[4] इस प्रकार से धर्मवीर जी ने अपने साहित्य में बहन के प्रति प्रेम का परिचय दिया है।

3. **पत्नी रूप में नारी**ः– एक पतिव्रता के रूप में नारी पूरे परिवार विशेषकर पति के प्रति समर्पित होती है। सेवाभावना में पूरे उत्कर्ष पर होती है। परिवार निर्माण में यहीं से उसकी भागीदारी शुरू होती है। वह स्त्री सचमुच ही स्त्री है जो पवित्र और चतुर है। वह पतिव्रता है, पति पर उसका प्रेम है सत्य बोलती है। ऐसी स्त्री सब प्रकार से रखने योग्य है और प्रिय होती है। प्रकृति ने नारी को पुरूष की पूरक कहा है वह पत्नी रूपा नारी को ही कहा है। पत्नी बनकर नारी पुरूष की सहधर्मिणी और अर्धागिनी बनती है। पतिव्रता नारी जिसे एक बार वरण कर लेती है, आजीवन उसी के प्रति समर्पित रहती है।

धर्मवीर भारती जी ने अपने साहित्य में नारी के पत्नी रूप का परिचय दिया है। उनका मानना है नर–नारी के ही स्वच्छ मिलन से ही यह विकास क्रम की गाड़ी आगे बढ़ती है। एक जगह भारती जी ने कहा है "जीवन में अलगाव, दूरी, दुख और पीड़ा आदमी को महान बना सकती है। भावुकता और सुख हमें ऊंचा नही उठाते। पीड़ा आदमी को महान बना सकती है बताओ सुधा तुम्हे क्या पसंद है। मैं ऊंचा उठू तुम्हारे सहारे, तुम ऊंची उठी मेरे विश्वास के सहारे, इससे अच्छा और क्या है सुधा। चाहो तो मेरे जीवन को एक पवित्र साधन बना दो चाहो तो एक छिछली अनुभूति।"[5]

अन्यत्र 'गुनाहों का देवता' उपन्यास में बर्टी ने अपने पत्नी को उपहार में एक दिन के लिए प्रेमी देने की सोची और एक शराबी को बुला लियाः– "शायद वे लोग प्रेम कर रहे होगें। बर्टी बोल और निश्चिलता से बैठ गया और क्षणभर बाद अजब नजारा देखा। एक बर्टी का हम उम्र आदमी हाथ से माथे का खून पौंछता हुआ आया। वह नशे में चूर या और भद्दी गालियां देता हुआ चला जा रहा था। वह गिरता पड़ता आया और उसके बर्टी को देखते ही घूसा ताना कि तुमने मुझे धोखा दिया..... .....इतने में अंदर से जेनी निकली। लम्बी तगड़ी कम से कम तीस वर्ष की औरत .....बोली जा सीधे, वरना हड्डी नही बचेगी यहां। वह फिर उठा तो खुद भी नीचे कूद पड़ी और घसीटती हुई दरवाजे के बाहर ढकेल आयी.....वह लौटी और बर्टी का कालर पकड़ लिया।"[6]

उपरोक्त विवेचन से बर्टी की पत्नी की पतिव्रत धर्म का परिचय मिलता है क्योंकि गैर मर्द का उससे प्यार, प्रेम की बातें करना भी गवारा नही समझती। इस प्रकार भारती जी के साहित्य में नारी के पत्नी रूप का वर्णन मिलता है।

4. **माता रूप में नारीः**– धर्मवीर भारती जी ने अपने साहित्य में नारी के मां रूप का वर्णन भी किया है। वे मां के बारे में कहते हैं कि वे मां को सब समर्पित करते हैं और कहते हैं कि मां अपने दायित्व को निभाने के लिए, संस्कारों को निभाने के लिए, रीति रिवाजों को निभाने के लिए चाहे उसको निभाते निभाते उसे आग की वेदी पर जलना ही क्यों न पड़े। वह उसे निभाने के लिए जलने को तैयार है। एक मां अपने बच्चों के लिए नाना प्रकार के सपने देखती है, चिंताओं से घिर जाती है, कभी बहुत खुश होती है, कभी उदास हो जाती है। अपने बच्चों के मन की बात को पढ़ लेती है उससे कुछ भी छिपता नही है। एक मां ही अपने बच्चों के लिए सपनों का संसार बन सकती है। धर्मवीर भारती जी ने अपने साहित्य में यत्र तत्र नारी के माता रूप का सजीव चित्रण किया है।
5. **प्रेमिका रूप में नारीः–** नर–नारी का आकर्षण प्राकृतिक सत्य है। इसलिए आदिकाल से नर–नारी के सम्बन्धों में प्रेम तत्व को अनिवार्य माना है। स्त्री एक बार जिसे प्रेम करती है, जीवन भर उसका साथ निभाती है। अपने प्रेमी से मिलन होने पर ही वह जीवन को सार्थक मानती है। यदि किन्ही कारणों से ऐसा सम्भव न हो तो वह अपने जीवन को निरर्थक समझकर प्राण तक त्याग देती है। भारतीय प्रेमिका के नारी इतिहास में अनेक ऐसे रूप हैं जो नारी को प्रेमिका रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। इसी कड़ी में प्रेम की झील कहां गया है। मीरा को। भारतीय प्रेमिका का आदर्श सावित्री को माना जाए तो अनुचित न होगा।

   धर्मवीर भारती ने अपने साहित्य में नारी के प्रेमिका रूप का सजीव चित्रण किया है सबसे अधिक मार्मिक अभिव्यंजना उन्हे अपने उपन्यास 'गुनाहों का देवता' में पात्र सुधा के माध्यम से एक अलौकिक प्रेमिका के रूप में की है। सुधा की शादी हो जाने के बाद वह चंदर से अंतिम बार मिलने जाती है। "सुधा कुछ बोली नही। आंचल से आंसू पोंछती हुई पायताने जमीन पर बैठ गई और अपने गले से बेले का एक हार उतारा .....मुझे किसी का डर नही, तुम जो दण्ड दे चुके हो उससे बड़ा दण्ड तो अब भगवान भी नही दे सकेगें।"[7]

   धर्मवीर भारती जी ने अपने साहित्य में प्रेमिका के लौकिक और अलौकिक दोनों रूपों में प्रेमिका नारी का मार्मिक चित्रण किया है।
6. **सास रूप में नारीः–** पारिवारिक सबंधों में सास–बहु का रिश्ता बहुत गूढ़ माना जाता हे। कुछेक साहित्य में सास के नकारात्मक रूप का वर्णन मिलता है कुछ साहित्य सकारात्मक रूप में। धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में कहीं कहीं सास के रूप में नारी की अभिव्यंजना दिखाई पड़ती है। अपने उपन्यास 'गुनाहों का देवता' ने नारी पात्र सुधा की सास की हल्की सी झलक दिखाई पड़ती है। सुधा चंद्र को खत लिखती है उसी में वह अपनी सास का जिक्र करती हैः–"और सब ठीक है यहां

बहुत आजादी है मुझे। मां जी भी अच्छी लगती है मुझे परदा बिल्कुल नही करती। अपने पूजा के बर्तन पहले ही दिन हमसे मंजवाए।"[8]

7. **सखी रूप में नारीः–** प्राचीनकाल से ही मनुष्य की प्रकृति रही है कि उसे अपना सुख–दुख सांझा करने के लिए एक सच्चे मित्र अथवा सखा की आवश्यकता रही है। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए साहित्यकारों ने अपने साहित्य में नारी को एक सखा के रूप में विशेष स्थान दिया है।

   धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में नारी के सखा रूप में सजीव चित्रण मिलता है। 'गुनाहों के दवेता' उपन्यास की पात्रा सुधा और सखी गेसू का आपसी बर्ताव उनके सख्य भाव को प्रकट करता हैः– "सुधा रानी बिल्कुल सच सच क्या कभी तुम्हारे मन में किसी के लिए मुहब्बत नही जगी। गेसू ने गम्भीरता से पूछा। देख गेसू तुझसे आज तक मैने कभी कुछ छिपाया नही न शायद कभी छिपाऊंगी..... और मुहब्बत का तो सच पूछे तो मैने जो कुछ कहानियों में पढ़ा है कि किसी को देखकर मैं रोने लगूं, गाने लगूं, पागल हो जाऊं। यह सब मुझसे नही होगा।"[9]

   एक अन्य स्थान पर नारी के सखा रूप का वर्णन धर्मवीर भारती के साहित्य में इस प्रकार मिलता हैः– "जब चंदर लौटने लगा तो देखा सुधा किताबें समेट रही है और बिसरिया जा चुका है। सुधा धमकी भरे स्वर में बोली अगर कल से साथ नही बैठोगे तो हम नही पढ़ेगें।"[10]

उपसहांर

कह सकते हैं कि धर्मवीर भारती जी का हमेशा से नारी के प्रति सम्मानीय दृष्टिकोण रहा है। वे नारी को सृष्टि को सबसे पूजनीय मानते हैं। यही कारण है कि उनके गद्य साहित्य में हमें नारी के विविध रूपों के अन्तर्गत मां रूप में, पुत्री रूप में, पत्नी रूप में, बहन रूप में, सास रूप में, प्रेमिका रूप में, सखी रूप में आदि का सफल वर्णन मिलता है। वे नारी को ईश्वरीय की अलौकिक सत्ता की सबसे सुन्दर देन मानते हैं समग्र संसार नारी के विविध रूपों के स्नेह जाल में गुम्फित है। सृष्टि को संचालिका के रूप में नारी हमेशा से वंदनीय रही है। धर्मवीर भारती जी ने नारी के विविध रूपों का वर्णन करके नारी जाति के प्रति अपने अगाध स्नेह को प्रदर्शित किया है, नारी केवल एक परिवार की ही नही दो परिवारों का पथ प्रदर्शक करने वाली, दुःख–दर्द बांटने वाली, सहनशीलता का सकार मूर्ति होती है। अतः नारी केवल हमारे समाज में ही नही अपितु पूरी सृष्टि में पूजनीय है। लेखक ने नारी के विविध स्वरूप पर लेखनी चलाकर नारी को सम्मानित स्थान प्रदान किया है।

संदर्भ

1. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 141
2. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 137
3. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न.6 पृ. 110
4. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न.1 पृ. 251

5. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 115
6. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 163
7. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 146–147
8. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 152
9. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 60
10. डा. चन्द्रकान्त वंदिवडेकरः धर्मवीर भारती ग्रन्थावली खण्ड न. पृ. 67

IJRTS
Publications